

शीतकाल में पौधों के ऊपर पिरूल/अन्य घास फूस का झापा बना देना चाहिए। सामान्यतया पौधों पर कीड़े, फफूंद आदि का प्रकोप नहीं देखा गया है। ग्रीष्मकाल में पौधों को आग से बचाना आवश्यक है। रोपण के 5 वर्ष पश्चात पत्तियों का उपयोग प्रारम्भ किया जा सकता है किन्तु लगभग 10 वर्षों के उपरान्त ही पेड़ों से पत्तियों का व्यावसायिक उत्पादन किया जाना चाहिए।

### पौध विक्रय केन्द्र

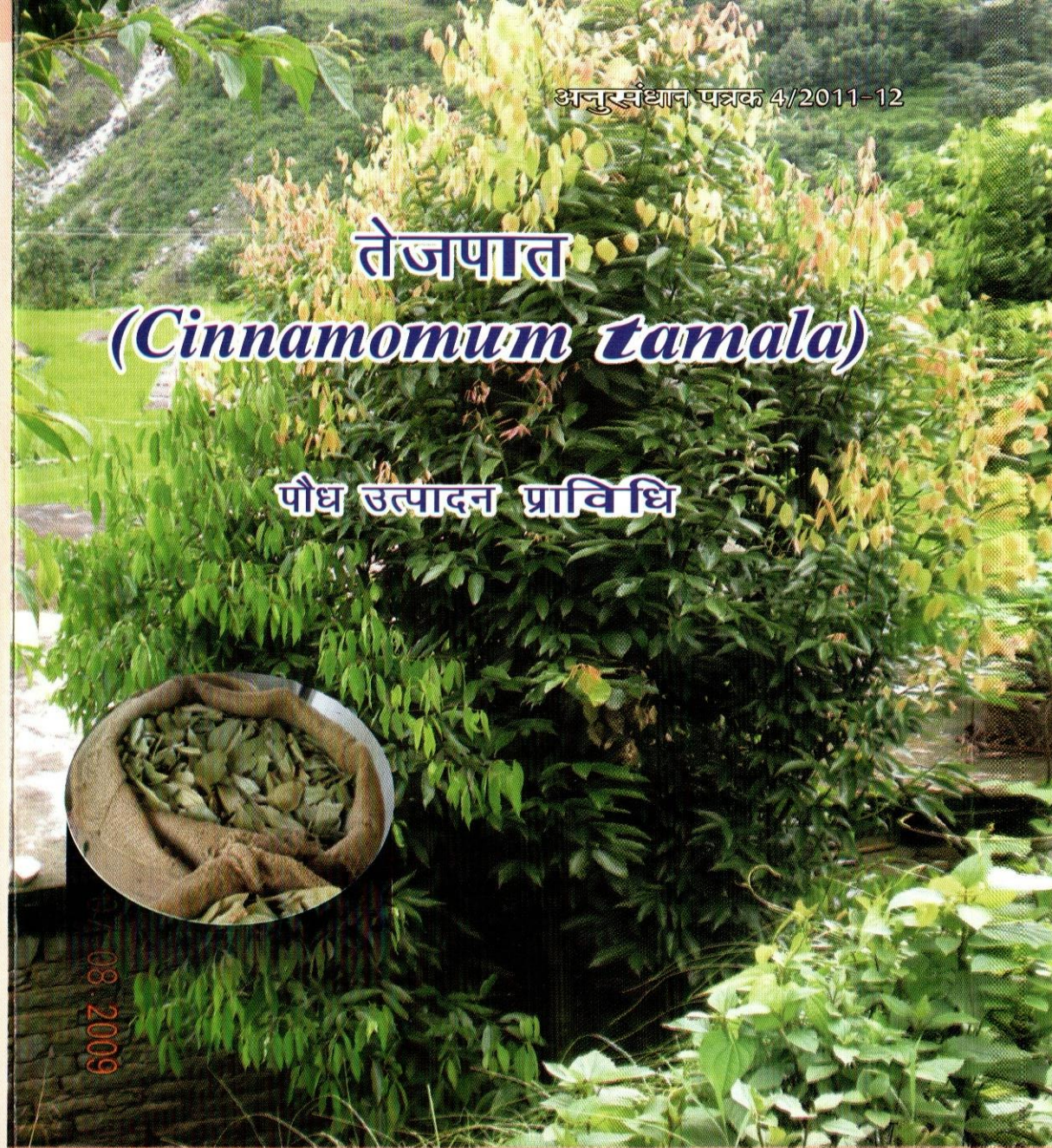
भुजियाघाट नर्सरी से तेजपात की गुणवत्तायुक्त पौध प्राप्त की जा सकती है। यह नर्सरी हल्द्वानी-नैनीताल रोड़ पर हल्द्वानी से लगभग 8 किमी की दूरी पर भुजियाघाट बाजार के समीप स्थित है। इसके अतिरिक्त सड़ियाताल (नैनीताल) में भी पौध बिक्रय केन्द्र स्थापित किया गया है जहाँ से तेजपात की पौध क्रय की जा सकती है। जनपद देहरादून के कालसी में भी विभागीय नर्सरी में तेजपात की पौध बिक्रय हेतु उपलब्ध रहती है।

### समयबद्ध कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य	वर्ष	माह
1	स्वस्थ बीज वृक्षों का चयन	—	कभी भी
2	बीज एकत्रीकरण	प्रथम वर्ष	मार्च-अप्रैल
3	बीज बुआई	प्रथम वर्ष	15 अप्रैल- 15 मई
4	प्रत्यारोपण	प्रथम वर्ष	जुलाई
5	पौध का रखरखाव	द्वितीय वर्ष	पूरे वर्ष
6	रोपण कार्य	तृतीय वर्ष	जुलाई-अगस्त

### विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

- 1- मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान  
मो0 9412076135, 05946-234047
- 2- वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त हल्द्वानी  
मो0 9458192126, 0596-235136
- 3- वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड, नैनीताल  
मो0 09458192184, 05942-236270



## तेजपात

## (*Cinnamomum tamala*)

### पौध उत्पादन प्राविधि

वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी

वन विभाग, उत्तराखण्ड

# तेजपात (*Cinnamomum tamala*)

## परिचय

तेजपात भारतीय मूल का एक सदाबहार वृक्ष है, जिसकी ऊँचाई 8 मीटर तक तथा गोलाई 130 सेमी० तक होती है। यह दक्षिणी भारत के ट्रापिकल क्षेत्रों की मुख्य मसाला प्रजाति है तथा हिमालयी क्षेत्र के सब ट्रापिकल क्षेत्रों में 600 से 1700 मीटर तक वन क्षेत्रों एवं नाप भूमि पर पाया जाता है। उत्तराखण्ड में पाये जाने वाले तेजपात एवं दक्षिणी भारत में पाये जाने वाले तेजपात की रासायनिक संरचना में भिन्नता होती है। उत्तराखण्ड में पाये जाने वाले तेजपात सीनामोल्डीहाइड टाइप के होते हैं एवं दक्षिणी भारत में पाये जाने वाले तेजपात यूजीनॉल टाइप के होते हैं जिनके मुख्य घटक क्रमशः सीनामोल्डीहाइड व यूजीनॉल (60 से 70 प्रतिशत) होते हैं। इसके अतिरिक्त उत्तराखण्ड के तेजपात में लीनालुल 15-20 प्रतिशत एवं दक्षिणी भारत के तेजपात में लीनालुल काफी कम मात्रा में पाया जाता है। सीनामोल्डीहाइड के कारण उत्तराखण्ड के तेजपात को मीठा तेजपात के रूप में जाना जाता है तथा इसका मुख्य उपयोग च्यवनप्राश व अन्य दवा निर्माण में किया जाता है जबकि यूजीनॉल के कारण दक्षिणी भारत के तेजपात का मुख्य उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है। जहाँ तक विक्रय मूल्य का प्रश्न है उत्तराखण्ड के तेजपात का अधिक मूल्य प्राप्त होता है।

तेजपात के पौधों में पुष्पण मार्च-अप्रैल में होता है एवं फल अगले वर्ष फरवरी से मार्च-अप्रैल तक पकता है। इस प्रकार मार्च में नये फूल एवं विगत वर्ष के फूल से बने फल एक साथ देखे जा सकते हैं। फल सामान्यतः एक वर्ष अधिक तो अगले वर्ष कम पाया जाता है। परिपक्व बीज का एकत्रीकरण मार्च-अप्रैल में किया जाता है। ग्रामीण प्रायः एक वर्ष के अंतराल पर तेजपात की टहनियाँ अक्टूबर से जनवरी के मध्य काटते हैं तथा 15 वर्ष के पेड़ से लगभग 20-25 किग्रा. तक सूखा पत्ता प्राप्त होता है। ग्रामीण सुखाने के लिये 3-4 दिन तक पत्ते को धूप में रखते हैं तथा पाले व पानी से बचाते हैं जिससे पत्ते में हरापन बना रहे। इसकी पत्तियों व छाल का उपयोग मुख्यतः मसाले के रूप में किया जाता है। इसकी पत्तियों से सुगंधित तेल भी प्राप्त किया जाता है जिसका प्रयोग विभिन्न औषधियों के निर्माण में किया जाता है।

## प्रवर्धन प्राविधि

तेजपात का प्रवर्धन इसके बीज व कटिंग दोनों से किया जा सकता है किन्तु बीज द्वारा पौध उत्पादन का कार्य सरल व व्यावहारिक है। कटिंग द्वारा मात्र 10 से 15 प्रतिशत तक सफलता प्राप्त होती है

जबकि बीज द्वारा 75 से 80 प्रतिशत तक सफलता पाई गयी है। अतः तेजपात का प्रवर्धन मुख्यतः बीज द्वारा किया जाता है।

## बीज द्वारा पौध तैयार करना

### बीज एकत्रीकरण व बुआई

उच्च गुणवत्ता के बीज प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम मध्य आयु के स्वस्थ व रोग मुक्त वृक्षों का चयन किया जाता है तथा इन्हीं वृक्षों से बीज माह मार्च-अप्रैल में एकत्र किया जाता है। बीज एकत्रीकरण के उपरान्त हाथ से रगड़ कर छिलका अलग कर देते हैं तथा बीज को हल्की धूप में 4 से 5 दिन तक सुखाते हैं। तेजपात के बीज की वायुबिलिटी लगभग तीन माह होती है। अतः बीज सुखाने के उपरान्त यथाशीघ्र बीज की बुआई कर देनी चाहिए एवं गतवर्ष के पुराने बीज का प्रयोग नहीं करना चाहिए। बीज बुआई का कार्य 15 अप्रैल से 15 मई के मध्य अवश्य कर लेना चाहिए।



### पौध प्रत्यारोपण

20 से 25 दिनों में अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है। प्रत्यारोपण हेतु जुलाई का समय सर्वाधिक उपयुक्त होता है जब पौधों में चार या इससे अधिक पत्तियाँ आ जाती हैं। पौधों का प्रत्यारोपण सावधानीपूर्वक 300 सी०सी० के रूट-ट्रेनरों या 6"X 4" की पालीथीन बैग में करना चाहिए। रूट ट्रेनरों में पॉटिंग मीडियम मिट्टी :



वर्मीकम्पोस्ट (2:1 के अनुपात) रखने से अच्छे परिणाम प्राप्त हुये हैं। ग्रामीणों द्वारा पौलीथीन में तैयार की हुयी पौध पसन्द की जाती है क्योंकि पौलीथीन में तैयार पौध की बढ़त अधिक पाई गयी है तथा इनका दुलान करना भी आसान होता है।

### कटिंग द्वारा पौध तैयार करना

कटिंग में 5000 PPM IBA हार्मोन का प्रयोग कर लगभग 10 से 15 प्रतिशत तक सफलता प्राप्त हुई है। सफलता प्रतिशत कम होने के कारण तेजपात के प्रवर्धन हेतु इस तकनीक का प्रयोग नहीं किया जाता है। किसी गुणवत्तापूर्ण वृक्ष विशेष के वर्धी प्रजनन हेतु ही इस तकनीक का प्रयोग किया जाना चाहिए।

### वृक्षारोपण

बीज से उगायी गयी लगभग 2 वर्ष पुरानी पौध रोपण हेतु उपयुक्त होती है। ठण्डे स्थानों पर पाले का प्रतिकूल प्रभाव देखा गया है। अतः पाले से बचाव के लिए